कई विध विध के सुख धाम के, जो हमको दिए इत जी।
तारतम करके रोसनी, कई बिध करी प्राप्त जी।।४।।

परमधाम के भी कई सुख हमको यहीं पर दिए। हमने भी तारतम वाणी को समझकर कई तरह से उनको प्राप्त किया।

सेहेजल सुखमें झीलते, काहूं दुख न सुनिया नाम जी।
सो मायामें इत आए के, सुख अखंड देखाया धाम जी।।५।।

परमधाम में हम सहज में आराम से रहते थे। कभी दुःख का नाम तक नहीं सुना था। अब दुःख रूपी माया में आकर भी अखण्ड परमधाम के सुख की लज्जत दी।

कहे इंद्रावती अति उछरंगे, हमको लाड़ लड़ाए जी।
निरमल नेत्र किए जो आतम के, परदे दिए उड़ाए जी।।६।।

श्री इन्द्रावती जी बड़ी उमंग के साथ कहती हैं कि आपने हमको बहुत ही लाड लडाए हैं तथा हमारी आत्मा के नेत्रों को तारतम वाणी से निर्मल करके सब संशय मिटा दिए हैं।

आप पेहेचान कराई अपनी, लई अपने पास जगाए जी।
बड़ी बड़ाई दई आपथें, लई इंद्रावती कंठ लगाए जी।।७।।

आपने अपनी पहचान स्वयं कराई और जागृत करके अपने पास बुलाया। अपने से भी अधिक बड़ाई (मान) देकर श्री इन्द्रावतीजी को अपने गले से लगा लिया।

।। प्रकरण ।। ३६ ।। चौपाई ।। १०६७ ।।

नोट—श्यामजी के मन्दिर में श्यामाजी महारानी को (देवचन्द्रजी को) धाम धनीजी ने दर्शन दिया और उन्हें अपनी, श्यामाजी की, क्षर, अक्षर तथा अक्षरातीत के ब्रह्माण्डों की, ब्रज, रास, जागनी और धाम की लीलाओं की पहचान कराकर जागृत किया और उनके हृदय में विराजमान हो गए।

।। प्रगट वाणी ।।

निजनाम श्रीकृष्ण जी, अनादि अछरातीत।
सोतो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत।।१।।
श्री स्यामाजी वर सत्य हैं, सदा सत दुख के दातार।
विनती एक जो वल्लभा, मो अंगना की अविधार।।२।।
वानी मेरे पिउ की, न्यारी जो संसार।
निराकार के पार थें, तिन पार के भी पार।।३।।
अंग उत्कंठा उपजी, मेरे करना एह विचार।
ए सत वानी मथ के, लेऊं जो इनको सार।।४।।
इन सार में कई सत सुख, सो मैं निरने करूं निरधार।
ए सुख देऊं ब्रह्मसृष्ट को, तो मैं अंगना नार।।५।।
जब ए सुख अंग में आवहीं, तब छूट जाएं विकार।
आयो आनन्द अखंड घर को, श्री अछरातीत भरतार।।६।।

Nijanand App

अब लीला हम जाहेर करें, ज्यों सुख सैयां हिरदे धरें।
पीछे सुख होसी सबन, पसरसी चौदे भवन।। ७ ।।

अब हम लीला को जाहिर करते हैं, जिससे ब्रह्मसृष्टियों को सुनकर हृदय में सुख हो। पीछे जब यह वाणी चौदह लोकों में फैलेगी तो सारे संसार को सुख होगा।

अब सुनियो ब्रह्मसृष्ट विचार, जो कोई निज वतनी सिरदार।
अपनों धनी श्री स्यामा स्याम, अपना वासा है निज धाम।। ८ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि अब जो कोई ब्रह्मसृष्टि है, मेरे वतन (परमधाम) की है, मेरे विचार सुनो। अपने धनी श्यामा श्याम हैं और अपना घर परमधाम है।

सोई अखंड अछरातीत घर, नित्य बैकुंठ मिने अछर।
अब ए गुझ करूं प्रकास, ब्रह्मानंद ब्रह्मसृष्ट विलास।। ९ ।।

वह अपना घर अक्षर के पार अखण्ड है। अपना ठिकाना वहां है। ब्रह्माण्ड बनने और मिटने की लीला अक्षर ब्रह्म के तन से अव्याकृत और सबलिक में होती है। यह नित्य बैकुण्ठ है। अब उसी छिपी बात को जाहिर करती हूं कि परमधाम में श्री राजजी और सखियों के प्यार की क्या लीला है?

ए वानी चित दे सुनियो साथ, कृपा करके कहें प्राणनाथ।
ए किव कर जिन जानो मन, श्री धनीजी ल्याए धामथें वचन।। १० ।।

सुन्दरसाथजी, इस वाणी को चित्त देकर सुनना। अपने धनी प्राणनाथजी कृपा करके कह रहे हैं। ऐसा नहीं समझना कि यह कविता की गई है। यह वचन धाम धनी परमधाम से लाए हैं।

सो केहेती हूं प्रगट कर, पट टालूं आड़ा अंतर।
तेज तारतम जोत प्रकास, करूं अंधेरी सबको नास।। ११ ।।

अब उसे मैं जाहिर करती हूं। माया के परदे, जो किसी ने आज दिन तक नहीं खोले, वह खोल देती हूं। तारतम वाणी के ज्ञान के तेज प्रकाश से सम्पूर्ण अज्ञानता के अंधेरे को नष्ट कर देती हूं।

अब खेल उपजे के कहूं कारन, ए दोऊ इछा भई उतपन।
बिन कारन कारज नहीं होय, सो कहूं याके कारन दोए।। १२ ।।

अब खेल बनने के कारण बताती हूं। यह दो (ब्रह्मसृष्टि और अक्षर ब्रह्म) की इच्छा से बना है। बिना कारण के कार्य नहीं होता, इसलिए इसके दो कारण बताती हूं।

ए उपजाई हमारे धनी, सो तो बातें हैं अति घनी।
नेक तामें करूं रोसन, संसे भान देऊं सबन।। १३ ।।

हमारे धनी ने ही इस खेल को दिखाने की इच्छा हमारे दिल में पैदा की, जिसकी बातें बहुत हैं। उनमें से कुछ मैं प्रकट करती हूं, जिससे सबके संशय मिट जाएं।

अब सुनियो मूल वचन प्रकार, जब नहीं उपज्यो मोह अहंकार।
नाहीं निराकार नाहीं सुन्य, न निरगुन न निरंजन।। १४ ।।

अब आप परमधाम के मूल वचनों को सुनना। यह उस समय की बात है जब मोह सागर के ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति नहीं हुई थी। न निराकार था, न शून्य था, न निर्गुण था, न निरंजन था। कुछ भी नहीं था।

Nijanand App

ना ईश्वर ना मूल प्रकृती, ता दिन की कहूं आपा बीती।
निज लीला ब्रह्म बाल चरित्र, जाकी इछा मूल प्रकृत।।१५।।

न आदि नारायण और न उनकी माया (संसार) थी। उस दिन अपने ऊपर बीती बात बताती हूं। अक्षर ब्रह्म के बाल चरित्र की लीला मूल प्रकृति है, जो उनकी इच्छा का स्वरूप है, जिससे वह ब्रह्माण्ड को बनाते और मिटाते हैं।

नैन की पाओ पल में इसारत, कई कोट ब्रह्मांड उपजत खपत।
इत खेल पैदा इन रवेस, त्रैलोकी ब्रह्मा विष्णु महेस।। १६ ।।

अक्षर की मूल प्रकृति की आंख के चौथाई पल के इशारे में करोड़ों ब्रह्माण्ड बनते और मिटते हैं। यह खेल इस तरह से पैदा हुआ। इसके मालिक ब्रह्मा, विष्णु और शंकरजी हैं।

कई बिध खेलें यों प्रकृत, आप अपनी इछासो खेलत।
या समें श्री बैकुंठ नाथ, इछा दरसन करने साथ।। १७ ।।

इस तरह अक्षर ब्रह्म अपनी इच्छा से ऐसे माया के करोड़ों ब्रह्माण्ड बनवाते और मिटाते हैं। इस समय अक्षर ब्रह्म को ब्रह्मसृष्टियों के दर्शन करने की इच्छा हुई।

अछर मन उपजी ए आस, देखों धनीजी को प्रेम विलास।
तब सखियों मन उपजी एह, खेल देखें अछर का जेह।। १८ ।।

अक्षर के मन में यह भी चाहना हुई कि मेरे धनी अपनी सखियों के साथ क्या प्रेम की लीला करते हैं? मैं भी देखूं। तब सखियों के मन में भी अक्षर का खेल देखने की इच्छा हुई।

तब हम जाए पियासों कही, खेल अछर का देखे सही।
जब एह बात पियाने सुनी, तब बरजे हांसी करने घनी।। १९ ।।

तब हमने अपने धनी से जाकर कहा, हम अक्षर, जो माया का खेल बनवाते हैं, उसका खेल देखना चाहते हैं। हमारे धनी ने यह बात सुनी और हंसकर टाल दिया।

मने किए हमको तीन बेर, तब हम मांग्या फेर फेर फेर।
धनी कहें घर की ना रेहेसी सुध, भूलसी आप ना रेहेसी ए बुध।। २० ।।

धनी ने हमको तीन बार मना किया, पर हमने फिर भी खेल की मांग की। धनी ने कहा खेल में जाकर घर की सुध भूल जाएगी, अपने आपको भूल जाओगी और यह बुद्धि नहीं रहेगी।

तो मने करत हैं हम, हमको भी भूलोगे तुम।
तब हम फेर धनीसों कह्या, कहा करसी हमको माया।। २१ ।।

इसलिए हम तुम्हें मना करते हैं कि तुम हमको भी भूल जाओगी। हमने फिर धनी से कहा कि हमारा माया क्या करेगी?

तब हम मिलके कियो विचार, कह्या एक दूजी को हूजो हुसियार।
खेल देखन की हम पियासों कही, तब हम दोऊ पर अग्या भई।। २२ ।।

तब हम सखियों ने मिलकर विचार किया और फिर पिया से खेल देखने की मांग की। एक दूसरे को होशियार रहने को कहा। हम दोनों की मांग स्वीकार कर खेल देखने की आज्ञा दी।

Nijanand App

ए कहे दोऊ भिंन भिंन, खेल देखन के दोऊ कारन।
उपज्यो मोह सुरत संचरी, खेल हुआ माया विस्तरी।। २३ ।।

यह खेल देखने के दो भिन्न-भिन्न कारण हमने बताए हैं। अब राजजी की आज्ञा से मोह तत्व बना तथा माया के खेल का विस्तार हुआ। इसमें अक्षर की सुरता ने प्रवेश किया।

इत अछर को विलस्यो मन, पांच तत्व चौदे भवन।
या में महाविष्णु मन मन थें त्रैगुन, ताथें थिर चर सब उतपन।। २४ ।।

इसमें अक्षर का मन जो अव्याकृत है, वह कार्य में सतर्क हुआ और उसने पांच तत्व तथा चौदह लोकों का ब्रह्माण्ड बनाया। उसी में अव्याकृत का मन का स्वरूप महाविष्णु बना। महाविष्णु के मन से तीन गुण ब्रह्मा, विष्णु, महेश बने और उनसे सारा संसार बना।

या बिध उपज्यो सब संसार, देखलावने हमको विस्तार।
जो अग्या भई हम पर, तब हम जान्या गोकुल घर।। २५ ।।

इस तरह से सारे संसार की रचना हमारे दिखाने के वास्ते हुई। बनने के बाद धनी की आज्ञा हुई और हमने फरामोशी में यह देखा कि हम गोकुल में रहने लगे हैं।

ज्यों नींदमें देखिए सुपन, यों उपजे हम बृज वधू जन।
उपजत ही मन आसा घनी, हम कब मिलसी अपने धनी।। २६ ।।

जैसे नींद में सपना आता है, इसी तरह से हम फरामोशी में ब्रज की वधुएं बनीं। हमारे मन में इतनी चाहना हुई कि हम अपने धनी से कब मिलेंगे।

जेती कोई हैं ब्रह्मसृष्ट, प्रेम पूरन धनी पर दृष्ट।
कंसके बंध वसुदेव देवकी, इत आई सुरत चत्रभुज की।। २७ ।।

उनमें जितनी ब्रह्मसृष्टियां हैं उनकी नजर अपने धनी को देखना चाहती है। मन में अति प्रेम भरा है। कंस की जेल में वसुदेव और देवकी बन्द हैं, वहां पर चतुर्भुज स्वरूप भगवान विष्णु आए।

सुरत विष्णुकी चत्रभुज जोए, दियो दरसन वसुदेव को सोए।
पीछे फिरे केहेके हकीकत, अब दोए भुजा की कहूं विगत।। २८ ।।

चतुर्भुज स्वरूप भगवान विष्णु ने वसुदेव को दर्शन देकर और क्या करना है, की हकीकत समझाई। इसके बाद अब दो भुजा वाला स्वरूप प्रकट हुआ। उसकी हकीकत बताती हूं।

मूल सुरत अछर की जेह, जिन चाह्या देखों प्रेम सनेह।
सो सुरत धनी को ले आवेस, नंद घर कियो प्रवेस।। २९ ।।

अक्षर की मूल सुरता (आत्मा) जिसने सखियों के प्रेम देखने की इच्छा की थी, धनी का आवेश लेकर नन्दजी के घर में विष्णु के तन में प्रवेश किया।

दो भुजा सरूप जो स्याम, आतम अछर जोस धनी धाम।
ए खेल देख्या सैयां सबन, हम खेले धनी भेले आनंद घन।। ३० ।।

नन्दजी के घर के दो भुजा वाले स्वरूप में आतम अक्षर की है और धनी का जोश है। इस खेल में हम सब सखियां धनी के साथ मिलकर बड़े आनन्द से खेलीं।

Nijanand App

बाल चरित्र लीला जोबन, कई बिध सनेह किए सैयन।
कई लिए प्रेम विलास जो सुख, सो केते कहूं या मुख।। ३१ ।।

बाल लीला तथा जवानी की लीला के कई प्रकार के सुख सखियों ने लिए। कई तरह के प्रेम और विलास के सुख हमें मिले। इस मुख से कितने कहूं?

ए काल मायामें विलास जो करे, सो पूरी नींद में सब बिसरे।
पूरी नींद को जो सुपन, काल माया नाम धराया तिन।। ३२ ।।

कालमाया (ब्रज लीला) में जो हमने विलास लीला से आनन्द लिया था वह भूल गया। पूरी नींद के सपने को ही कालमाया कहते हैं।

तब धाम धनिऐं कियो विचार, ऐ दोऊ मगन हुए खेलें नर नार।
मूल वचन की नाहीं सुध, ए दोऊ खेलें सुपने की बुध।। ३३ ।।

धाम धनी ने विचार किया कि यह अक्षर और सखियां दोनों खेल में मगन (मग्न) होकर अपनी हकीकत भूल गए हैं। इन्हें अपने परमधाम के वचनों की सुध नहीं है। यह दोनों सपने की बुद्धि में भूल गए हैं।

एह बात धनी चितसों ल्याए, आधी नींद दई उड़ाए।
अग्यारे बरस और बावन दिन, ता पीछे पोहोंचे वृन्दावन।। ३४ ।।

इस बात का धनी ने मन में विचार किया और आधी नींद उड़ा दी, अर्थात् ग्यारह वर्ष और बावन दिन की लीला की और फिर प्रलय कर योगमाया के ब्रह्माण्ड में ले गए।

तहां जाए के बेन बजाई, सखियां सबे लई बुलाई।
तामसियां राजसियां चलीं, स्वांतसियां सरीर छोड़ के मिलीं।। ३५ ।।

वहां जाकर बांसुरी बजाई और सब सखियों को बुला लिया। तामसी और राजसी भागीं और स्वांतसियां (सात्विकी) घर में तन छोड़कर मिलीं।

और कुमारका बृज वधु संग जेह, सुरत सबे अछर की एह।
जो व्रत करके मिली संग स्याम, मूल अंग याके नाहीं धाम।। ३६ ।।

सखियों के साथ जो कुमारिका सखियां थीं वह सब अक्षर की सुरता हैं। वे व्रत करके श्याम को पति रूप में मांगकर योगमाया में पहुंचीं। इनके मूल तन धाम में नहीं हैं।

बेन सुनके चली कुमार, भव सागर यों उतरी पार।
इनकी सुरत मिली सब सखियों मांहें, अंग याके रासमें नांहें।। ३७ ।।

बांसुरी की आवाज सुनकर कुमारिकाएं भी भागकर भवसागर से पार हो गईं। इनकी सुरताएं सखियों के तनों में मिल गईं। एक एक सखी के अन्दर दो-दो कुमारिकाओं की सुरताएं बैठीं। इनके तन रास में अलग नहीं हैं।

या विध मुक्त इनों की भई, कुमारका सखियां जो कही।
ए जो अग्यारे बरस लो लीला करी, काल माया तितही परहरी।। ३८ ।।

इस तरह से यह भी भवसागर से छूट गईं। ग्यारह वर्ष तक लीला के बाद कालमाया का प्रलय कर दिया।

Nijanand App

कछू नींद कछू जाग्रत भए, जोग माया के सिनगार जो कहे।
जोगमाया में खेले जो रास, आनन्द मन आनी उलास।। ३९ ।।

योगमाया के तनों में जागृत अवस्था भी है (प्रीतम की पहचान है) और नींद भी है (परमधाम की सुध नहीं है।)। ऐसे योगमाया के ब्रह्माण्ड में बड़े आनन्द और उल्लास के साथ रास रमण किया।

जोग माया में खेल जो खेले, संग जोस धनी के भेले।
जोगमाया में बाढ़्यो आवेस, सुध नहीं दुख सुख लवलेस।। ४० ।।

योगमाया के ब्रह्माण्ड में जो खेल खेले उनमें हमारे धनी का आवेश बांकेबिहारी के अन्दर रहा। यह इतना अधिक बढ़ा कि दुःख और सुख की जरा भी सुध नहीं रही।

फेर मूल सरूपें देख्या तित, ए दोऊ मगन हुए खेलत।
जब जोस लियो खेंच कर, तब चित चौंक भई अछर।। ४१ ।।

श्री राजजी महाराज ने देखा कि यह दोनों (अक्षर और सखियां) फिर खेल में मस्त हो गई हैं। श्री राजजी महाराज ने अपना जोश वापस खींचा। तभी अक्षर की आतम चौंकी।

कौन बन कौन सखियां कौन हम, यों चौंक के फिरी आतम।
रास आया मिने जाग्रत बुध, चुभ रही हिरदे में सुध।। ४२ ।।

अक्षर की आत्मा सोचने लगी कि यह कौन सा वन है? यह सखियां कौन हैं? हम कौन हैं? इस तरह अक्षर की आत्मा चौंकी। उसे होश आया। इस तरह से रास लीला अखण्ड हुई। इसकी सुध उसके हृदय में चुभ गई।

कई सुख रास में खेले रंग, सो हिरदे में भए अभंग।
या बिध रास भयो अखंड, थिरचर जोगमाया को ब्रह्मांड।। ४३ ।।

कई प्रकार के सुख रास की लीला में लिए। वह सुख हृदय में अखण्ड हो गए। इस तरह से योगमाया का पूरा ब्रह्माण्ड अक्षर के हृदय में अखण्ड हो गया।

तब इत भए अंतरध्यान, सब सखियां भई मृतक समान।
जीव न निकसे बांधी आस, करने धनीसों प्रेम विलास।। ४४ ।।

धनी के अन्तर्ध्यान होते ही सखियां मुर्दे के समान (शक्तिहीन) हो गईं। उनका जीव नहीं निकला। धनी से मिलने की आशा लगी है।

विरह सैयोंने कियो अत, धनी दियो आवेस फेर आई सुरत।
तब सैयों को उपज्यो आनंद, सब विरहा को कियो निकंद।। ४५ ।।

सखियों ने बहुत विरह किया। तब श्री राजजी महाराज ने आवेश फिर उसी तन में डाला जिससे फिर सखियों को दर्शन दिये, दिखने लगे। तब सखियों को उनके आने से आनन्द हुआ। विरह का दुःख खत्म हो गया।

आया सरूप कर नए सिंनगार, भजनानंद सुख लिए अपार।
दोऊ आतम खेले मिने खांत, सुख जोस दियो कई भांत।। ४६ ।।

बिछुड़ने के बाद आए हुए नए स्वरूप का बड़ा मोहिनी रूप लगा। सखियों को विरह के बाद यह स्वरूप दुबारा मिला इससे उन्हें अति अधिक सुख हुआ। दोनों ही अक्षर और सखियां खूब प्रेम से खेले और तरह-तरह के सुख श्री राजजी ने दिए।

Nijanand App

कई विरह विलास लिए मिने रात, अंग आनन्द भयो जोलों प्रात।
रास खेल के फिरे सब एह, साथ सकल मन अधिक सनेह।। ४७ ।।

रास रात्रि में प्रातःकाल तक कई तरह से विलास और विरह के आनन्द लिए। रास खेलने के बाद अक्षर अपने धाम में और सखियां परमधाम में लौटीं तो उनके मन आनन्द से भरे हुए थे।

पीछे जोग माया को भयो पतन, तब नींद रही अछर सैयन।
बृज लीलासों बांधी सुरत, अखंड भई चढ़ आई चित।। ४८ ।।

इसके बाद योगमाया के ब्रह्माण्ड को केवल ब्रह्म (बुद्धि) से सबलिक ब्रह्म (चित्त) में लाकर अखण्ड कर दिया। इस अखण्ड होने का पता सखियों और अक्षर को नहीं लगा, इसलिए खेल देखने की चाहना बनी रही। इसके बाद ब्रज लीला (नाटक वाली जो रास में की थी) याद आ गई। वह भी अखण्ड हो गई।

अछर चितमें ऐसो भयो, ताको नाम सदा सिव कह्यो।
बृज रास दोऊ ब्रह्मांड, ए ब्रह्म लीला भई अखंड।। ४९ ।।

अक्षर के चित्त को योगमाया में सदाशिव चेतन (सबलिक ब्रह्म) कहते हैं जहां ब्रज और रास की दोनों लीलाएं जो योगमाया में देखी थीं, अखण्ड हो गईं।

बृज रास लीला दोऊ मांहें, दुख तामसियों देख्या नांहें।
प्रेम पियासों ना करे अंतर, तो ए दुख देखें क्यों कर।। ५० ।।

ब्रज और रास की लीला में तामसी सखियों ने दुःख नहीं देखा था, क्योंकि धनी के प्रेम में एकरस थीं, इसलिए दुःख कैसे देखतीं।

कछुक हमको रह्यो अंदेस, सो राखे नहीं धनी लवलेस।
ता कारन ए भयो सुपन, हुए हुकमें चौदे भवन।। ५१ ।।

हम सखियों को खेल देखने की इच्छा बाकी रह गई थी, इसलिए धनी उसे भी क्यों बाकी रहने देते? हमारी इच्छा पूरी करने के लिए धनी के हुक्म से यह नया कालमाया का ब्रह्माण्ड बना।

काल माया को एजो इंड, उपज्यो और जाने सोई ब्रह्मांड।
ए तीसरा इंड नया भया जो अब, अछर की सुरत का सब।। ५२ ।।

यह जो कालमाया का नया ब्रह्माण्ड बना, यहां के रहने वाले यही जानते हैं कि यह वही दुनियां है। यह तीसरा नया इण्ड (ब्रह्माण्ड) अक्षर की सुरता (कालमाया) का है।

याही सुरत की सखियां भई, प्रतिबिंब वेद रुचा जो कही।
जाको कह्यो ऊधो ग्यान जोगारंभ, सोक्यों माने प्रेमलीला प्रतिबिंब।। ५३ ।।

इस ब्रह्माण्ड में जो प्रतिबिम्ब की लीला में सखियां बनीं वह कुमारिका (का आवेश था) थीं, जिनको वेद-ऋचाएं कहते हैं। इन्हें ज्ञान देने के लिए ऊधव गए थे। कुमारिका सखियां जो प्रतिबिम्ब की लीला में थीं, उन्होंने ऊधव के ज्ञान को नहीं माना।

जो ऊधोने दई सिखापन, सो मुख पर मारे फेर वचन।
याही विरह में छोड़ी देह, सो पोहोंची जहां सरूप सनेह।। ५४ ।।

ऊधव ने उनको ज्ञान समझाया तो उन सखियों ने उलटा ऊधव को समझाया (कि हे ऊधव! हमारे प्रीतम हमारे अन्दर हैं, तू अपनी ज्ञान पिटारी ले जा) और ऐसे विरह में ही सौ वर्ष तक तड़प-तड़पकर शरीर त्याग दिया और अपने प्रीतम के साथ अखण्ड हो गईं।

Nijanand App

अछर हिरदे रास अखंड कह्यो, ए प्रतिबिंब साथ तहां पोहोंचयो।
ए प्रतिबिंब लीला भई जो इत, सो कारन ब्रह्मसृष्ट के सत।।५५ ।।

अक्षर के हृदय में (सबलिक ब्रह्म में) रास अखण्ड हुआ है। यह प्रतिबिम्ब के स्वरूप वहीं पहुंचे। प्रतिबिम्ब की लीला जो यहां हुई, वह ब्रह्मसृष्टि की अखण्ड रास लीला (सत) को जाहिर करने के लिए हुई है।

जो प्रगट लीला न होवे दोए, तो असल नकल की सुध क्यों होए।
ता कारन ए भई नकल, सुध करने संसार सकल।।५६ ।।

यदि रास की दो लीलाएं न होतीं तो असल और नकल की पहचान न होती। इसीलिए यह प्रतिबिम्ब की नकली लीला हुई, जिससे सबको ज्ञान हो जाए कि असल रास कहीं और खेली गई।

सारे अर्थ तब होवें सत, जो प्रगट लीला दोऊ होवें इत।
याही इंडमें श्रीकृष्णजी भए, सो अग्यारे दिन बृज मथुरा रहे।।५७ ।।

यह सब बातें तभी सत्य होंगी जब दोनों लीलाएं इस कालमाया के ब्रह्माण्ड में जाहिर हों। इसी ब्रह्माण्ड में गोलोक के श्री कृष्णजी ग्यारह दिन तक ब्रज और मथुरा में रहे।

दिन अग्यारे ग्वालो भेस, तिन पर नहीं धनी को आवेस।
सात दिन गोकुल में रहे, चार दिन मथुरा के कहे।।५८ ।।

ग्यारह दिन तक ग्वाले का भेष रहा, पर इसमें धनी का आवेश नहीं है। सात दिन गोकुल में तथा चार दिन मथुरा में लीला की।

गज मल कंस को कारज कियो, उग्रसेन को टीका दियो।
काला ग्रह में दरसन दिए जिन, आए छुडाय बंध थें तिन।।५९ ।।

कुबलयापीड़ हाथी का, चाणूर और मुष्टिक पहलवानों का तथा कंस का कल्याण किया। उग्रसेन का राज तिलक किया। वसुदेव और देवकी को बन्धन से मुक्त किया। यह स्वरूप गोलोक धाम का है जो जेल में जन्म के बाद विष्णु भगवान के तन में प्रवेश किया था।

वसुदेव देवकी के लोहे भांन, उतार्‌यो भेख किए अस्नान।
जब राज बागे को कियो सिनगार, तब बल पराक्रम ना रह्यो लगार।।६० ।।

वसुदेव और देवकी को बंध से छुड़ाने के बाद यमुना में स्नान किया और ग्वाले का भेष उतारा और नन्द बाबा को सौंप दिया। अब यहां पर नहाने के बाद राजसी पोशाक पहनी तो गोलोक की शक्ति वापस चली गई थी और उस समय केवल विष्णु का पूर्ण रूप था, जो शक्तिहीन था।

आय जरासिंध मथुरा घेरी सही, तब श्रीकृष्णजी को अति चिंता भई।
यों याद करते आया विचार, तब कृष्ण विष्णु मय भए निरधार।।६१ ।।

जब जरासिंध ने मथुरा आकर चढ़ाई की तब इस कृष्ण को चिन्ता हुई कि अब मैं क्या करूं, तो बैकुण्ठ को याद किया और कृष्ण रूप से विष्णु रूप हो गए।

तब बैकुंठे में विष्णु ना कहे, इत सोलेकला संपूरन भए।
या दिन थें भयो अवतार, ए प्रगट वचन देखो विचार।।६२ ।।

उस समय विष्णु भगवान बैकुण्ठ में नहीं थे। यहीं सोलह कला सम्पूर्ण हो गए। इस दिन से कृष्ण अवतार की लीला गिनी जाती है। इन वचनों को विचार के देखो।

Nijanand App

सिसुपाल की जोत बैकुंठ गई, समाई श्रीकृष्ण में तित न रही।
आउध अपने मंगाए के लिए, कई बिध जुध असुरों सो किए।। ६३ ।।

शिशुपाल को मारने के बाद उसका जीव बैकुण्ठ गया, परन्तु विष्णु भगवान के नहीं होने से जीव लौटकर आया और श्री कृष्ण के तन में समा गया। बैकुण्ठ से उन्होंने अपने हथियार मंगा लिए और कई तरह से असुरों से युद्ध किया।

मथुरा द्वारका लीला कर, जाए पोंहोचे विष्णु बैकुंठ घर।
अब मूल सखियां धाम की जेह, तिन फेर आए धरी इत देह।। ६४ ।।

मथुरा और द्वारिका की लीला करके विष्णु भगवान अपने बैकुण्ठ चले गए। अब इस ब्रह्माण्ड में मूल घर परमधाम से सखियों ने आकर नए तन धारण किए।

उमेदां तामसियां रही तिन बेर, सो देखन को हम आइयां फेर।
इन ब्रह्मांड को एह कारन, सुनियो आतम के श्रवन।। ६५ ।।

तामसियों की इच्छा खेल देखने की बाकी रह गई थी। उसे देखने के लिए हम सब यहां पर आईं। यह नए ब्रह्माण्ड बनने का कारण है, जिसे ध्यान से सुनना।

रास खेलते उमेदां रहियां तित, सो ब्रह्मसृष्ट सब आइयां इत।
यामे सुरत आई स्यामाजी की सार, मतू मेहेता घर अवतार।। ६६ ।।

रास खेलते समय जो चाहना बाकी रह गई थी, उसके वास्ते सभी ब्रह्मसृष्टियां यहां आईं। इनमें श्यामाजी की आत्मा मत्तू मेहेता के घर देवचन्द्रजी के तन में उतरी।

कुंवरबाई माता को नाम, उतम काइथ उमरकोट गाम।
आए श्री देवचन्दजी नौतनपुरी, सुख सबों को देने देह धरी।। ६७ ।।

देवचन्द्रजी की माता का नाम कुंवरबाई है, जो उमरकोट गांव के रहने वाले उत्तम कायस्थ परिवार में से हैं। श्री देवचन्द्रजी बाद में नौतनपुरी आये और सबको सुख देने के लिए उन्होंने तन धारण किया।

इन इत आए करी बड़ी खोज, चाहे धनी को मूल संजोग।
अंग मूल उपजी ए दृष्ट, सास्त्र सब्द खोजे कई कष्ट।। ६८ ।।

नौतनपुरी में आकर श्यामाजी (देवचन्द्रजी) ने बड़ी खोज की और अपने मूल प्रीतम से मिलने की चाहना की। इनकी इसी चाहना से उन्होंने शास्त्र के शब्दों के भेद को बड़ी मेहनत से खोजा।

चौदे बरसलों नेष्टा बंध, वचन ग्रहे सारी सनंध।
कई जप तप किए व्रत नेम, सेवा सरूप सनेह अति प्रेम।। ६९ ।।

चौदह वर्ष तक नेष्टा बंध (निष्ठावद्ध) होकर उन्होंने बड़े ढंग से शास्त्रों के वचनों को सुना। उन्होंने कई जप, तप, व्रत और नियम बड़े प्रेम से किए। चित्त में वृन्दावन के बांकेबिहारी के स्वरूप का बड़े प्रेम से चितवन करते रहे।

कई कसनी कसी अति अंग, प्रेम सेवामें न कियो भंग।
कई कसौटी करी दुलहिन, सो कारन हम सब सैयन।। ७० ।।

ऐसा करने के लिए बड़े कष्ट सहे, परन्तु प्रेम से सेवा करने में रुकावट नहीं आने दी। श्यामाजी (देवचन्द्रजी) ने कई तरह के दुःख उठाए, वह भी सब हम सुन्दरसाथ के वास्ते।

Nijanand App

पिया किए अति प्रसन, तीन बेर दिए दरसन।
तारतम बात वतन की कही, आप धाम धनी सब सुध दई।।७१ ।।

अपने प्रीतम को सेवा से प्रसन्न किया। प्रीतम ने तीन बार दर्शन दिये (एक बार बारात के पीछे जाते हुए सिपाही के भेष में, दूसरी बार चितवन में अखण्ड ब्रज का ध्यान धरते समय तथा तीसरी बार श्यामजी के मन्दिर में)। तीसरी बार तारतम वाणी से घर की सब बातें बताईं और धाम धनी ने इश्क रब्द की सब सुध दी।

धर्‌यो नाम बाई सुन्दर, निज वतन देखाया घर।
इत दया करी अति घनी, अंदर आए के बैठे धनी।।७२ ।।

धाम-धनी ने श्यामाजी का नाम इस खेल में सुन्दरबाई रखा और अपना वतन परमधाम दिखाया। बड़ी कृपाकर उनके तन में धनी विराजमान हो गए।

दियो जोस खोले दरबार, देखाया सुन्य के पार के पार।
ब्रह्मसृष्ट मिने सुन्दरबाई, ताको धनीजीएं दई बड़ाई।।७३ ।।

अपना आवेश देकर धाम के दरवाजे खोल दिए और निराकार के पार अक्षर तथा अक्षर के पार वतन (परमधाम) को दिखाया। ब्रह्मसृष्टियों के बीच में सुन्दरबाई (श्यामा महारानीजी) को बड़ा मान दिया।

सब सैयों मिने सिरदार, अंग याही के हम सब नार।
श्री धाम धनी जी की अरधंग, सब मिल एक सरूप एक अंग।।७४ ।।

यह श्यामा महारानी जिनका नाम धनी ने सुन्दरबाई रखा, वह ब्रह्मसृष्टि की सिरदार (प्रमुख) हैं और सब सखियां उन्हीं के अंग हैं। श्यामा महारानी श्री राजजी महाराज की अंगना हैं और हम सुन्दरसाथ तथा श्री राजजी श्यामाजी एक ही स्वरूप हैं।

श्री धाम लीला बैकुंठ अखंड, बृज रास लीला दोऊ ब्रह्मांड।
ए सब हिरदेमें चढ़ आए, ज्यों आतम अनुभव होत सदाए।।७५ ।।

श्री देवचन्द्रजी को अब परमधाम की, अक्षरधाम की, अखण्ड ब्रज रास की, दोनों अखण्ड ब्रह्माण्डों की (ब्रज और रास और अक्षर की) लीला हृदय में याद आ गई और आत्मा को सदा ही अनुभव होने लगा।

अब ऐ केते कहूं प्रकार, निजधाम लीला नित बड़ो विहार।
अछरातीत लीला किसोर, इत सैयां सुख लेवें अति जोर।।७६ ।।

अब इनका कहां तक वर्णन करूं। परमधाम की लीला में नित्य ही बड़ा आनन्द होता है। जहां अक्षरातीत श्री राजजी महाराज किशोर स्वरूप की लीला करते हैं और सब सखियों को अत्यधिक आनन्द मिलता है।

मोहोल मंदिर को नाहीं पार, धाम लीला अति बड़ो विस्तार।
इन लीला की काहूं ना खबर, आज लगे बिना इन घर।।७७ ।।

परमधाम के मोहल तथा मन्दिर बेशुमार हैं। धाम की लीला का विस्तार बहुत भारी है। आज तक इस घर की लीला की खबर किसी को नहीं थी। मात्र श्री राजजी, श्यामाजी और सखियां ही जानती थीं।

ब्रह्मसृष्ट बिना न जाने कोए, ए सृष्ट ब्रह्मथें न्यारी न होए।
सो निध ब्रह्मसृष्ट ल्याईया इत, ना तो ए लीला दुनियां में कित।।७८ ।।

इस परमधाम की लीला को ब्रह्मसृष्टि के बिना कोई नहीं जानता। ब्रह्मसृष्टि कभी ब्रह्म से अलग हो ही नहीं सकती। इसलिए यह न्यामत ब्रह्मसृष्टि ही लाई हैं, नहीं तो दुनियां को इस लीला का पता ही नहीं था।

Nijanand App

ए बानी धनी मुखथें कहे, सो ए दुनियां क्यों कर लहे।
गांगजी भाई मिले इन अवसर, तिन ए वचन लिए चित धर।।७९ ।।

यह वाणी श्री धाम धनी ने अपने मुखारबिन्द से कही है, इसलिए यह दुनियां वाले कैसे ग्रहण कर सकते हैं? गांगजी भाई इस समय मिले और उन्होंने इन वचनों को ध्यान से सुना और ग्रहण किया।

कर विचार पूछे वचन, नीके अर्थ लिए जो इन।
जब समझाई पार की बान, तब धनी की भई पेहेचान।।८० ।।

विचार करके इन वचनों के भेद पूछे और श्री देवचन्द्रजी ने उनके अच्छी तरह से अर्थ समझाए। जब परमधाम का ज्ञान बताया तो गांगजी भाई को श्री देवचन्द्रजी के अन्दर बैठे श्री राजजी महाराज की पहचान हुई।

अपने घरों लिए बुलाए, सेवा करी बोहोत चित ल्याए।
सनेहसों सेवा करी जो घनी, पेहेचान के अपना धाम धनी।।८१ ।।

गांगजी भाई फिर धाम धनी को अपने घर ले गये और बड़े प्रेम से अपने धाम का धनी जानकर अधिक सेवा की।

तब श्रीमुख वचन कहे प्राणनाथ, ढूंढ काढ़नो अपनो साथ।
माया मिने आई सृष्ट ब्रह्म, सो बुलावन आए हैं हम।।८२ ।।

तब श्री प्राणनाथजी (धनी देवचन्द्रजी) ने अपने श्री मुख से यह वचन कहे कि सुन्दरसाथ को ढूंढ़कर निकालना है। ब्रह्मसृष्टियां माया के खेल में आई हैं, जिनको बुलाने के लिए हम आए हैं।

हम आए हैं इतने काम, ब्रह्मसृष्ट लेने घर धाम।
तब गांगजी भाई पायो अचरज मन, कौन मानसी पार के वचन।।८३ ।।

मैं केवल ब्रह्मसृष्टि को घर ले जाने के लिए ही आया हूं। तब गांगजी भाई के मन में बड़ा आश्चर्य हुआ कि पार के वचनों को कौन मानेगा?

कह्या ब्रह्मसृष्ट क्यों मिलसी, चाल तुमारी क्यों चलसी।
मोहजल पूर तीखा अति जोर, नख अंगुरी को ले जाए तोर।।८४ ।।

गांगजी भाई ने कहा कि ब्रह्मसृष्टि कैसे मिलेगी और आप के बताए ज्ञान पर कैसे चलेगी? माया का बहाव बड़ा तेज है। इसके छू जाने से ही उंगली से नाखून कट जाता है।

तरंग बड़े मेर से होए, इत खड़ा ना रेहेने पावे कोए।
लेहेरें पर लेहेरें मारे घेर, मांहें देत भमरियां फेर।।८५ ।।

इस भवसागर में पहाड़ के समान लहरें आती हैं, जहां कोई खड़ा नहीं रह सकता। लहरों पर लहरें आती हैं और भंवरियां (भंवर) भी पड़ती हैं।

आड़े टेढ़े मांहें बेहेवट, विक्राल जीव मांहें विकट।
दुखरूपी सागर निपट, किनार बेट न काहूं निकट।।८६ ।।

यह भवसागर टेढ़ा-मेढ़ा है और उसके अन्दर भयंकर जीव हैं। यह निश्चित ही दुःख का सागर है। जिसमें सहारे के लिए पास में किनारा या कोई टापू दिखाई नहीं पड़ता।

Nijanand App

ऊंचा नीचा गेहेरा गिरदवाए, कठन समया इत पोहोंच्या आए।
हाथ ना सूझे सिर ना पाए, इन अंधेरी से निकस्यो न जाए।। ८७ ।।

यह चारों तरफ से ऊंचा-नीचा और गहरा है। समय भी बड़ा कठिन है। अन्धकार भी इतना है कि कोई किसी को पहचानता नहीं और इस अंधेरे से निकलना मुश्किल है।

चढ़्यो मायाको जोर अमल, भूलियां आप मांहें घर छल।
ना सुध धनी ना मूल अकल, इन मोहजलको ऐसो बल।। ८८ ।।

यहां हर एक को माया का नशा चढ़ा है, इसलिए सब इस छल के संसार में अपने आपको भूल गए हैं। इन्हें न तो अपनी सुध है, न धनी की पहचान है, न मूल की बुद्धि है। ऐसी भवसागर की ताकत है।

वचन बेहद के पार के पार, सो क्यों माने हदको संसार।
त्रैगुन महाविष्णु मोह अहंकार, ए हद सास्त्रों करी पुकार।। ८९ ।।

यह वाणी बेहद के पार अक्षर तथा अक्षर के पार अक्षरातीत धाम की है। उसे इस संसार के लोग कैसे मानेंगे? त्रिगुण, महाविष्णु, नारायण, मोह तत्व, अहंकार—यह सब क्षर के अन्दर मिटने वाले हैं, ऐसा शास्त्रों ने वर्णन किया है।

ब्रह्मसृष्ट भी धरे मोहके आकार, सो इत आवसी कौन प्रकार।
तब श्रीधनीजीएं कहे वचन, बेहेर दृष्ट होसी रोसन।। ९० ।।

ब्रह्मसृष्टियों ने भी मोह के आकार धारण कर रखे हैं। वह आपके चरणों में कैसे आएंगी। तब श्री धनीजी ने कहा कि रहस्यमय आडीका (चमत्कारिक) लीला कुछ समय तक के लिए करूंगा।

ए बंधेज कियो अति जोर, रात मेट के करसी भोर।
प्रतछ प्रमान देसी दरसन, ए लीला चित धरसी जिन।। ९१ ।।

धाम धनी कह रहे हैं कि इस तरह से पूरा इन्तजाम कर लिया है। अज्ञान हटाकर उजाला कर देंगे तथा प्रमाणों में प्रत्यक्ष की लीला करके दिखाऊंगा जिससे वह चित्त में धारण करेंगे।

साथ कारन आवसी धनी, घर घर वस्तां देसी घनी।
साथ मांहें इत आरोगसी, विध विधके सुख उपजावसी।। ९२ ।।

सुन्दरसाथ के वास्ते धाम धनी आएंगे और घर-घर में तरह-तरह की वस्तुएं देंगे। सुन्दरसाथ के बीच बैठकर आरोगेंगे तथा तरह-तरह के सुख देंगे।

अचरा पकर पिउ देखलावसी, एक दूजी को प्रेम सिखलावसी।
ए लीला बढ़सी विस्तार, साथ अंग होसी करार।। ९३ ।।

सुन्दरसाथ धनी के आंचल को पकड़कर दिखलाएंगे और एक-दूसरे से प्रेम करना सिखाएंगे। इस लीला का बड़ा विस्तार होगा। सुन्दरसाथ को बड़ा आराम होगा।

तब बानी को करसी विचार, सब माएने होसी निरवार।
तब आवसी ब्रह्मसृष्ट, जाहेर निसान देखसी दृष्ट।। ९४ ।।

सब सुन्दरसाथ इस वाणी का विचार करेंगे। इसके भेद उनको खुलेंगे। ऐसी जाहिरी लीला देखकर ब्रह्मसृष्टि आएगी।

Nijanand App

ए बंधेज कियो उत्तम, पर धामकी निध सो कही तारतम।
जिनसेती होवे पेहेचान, नजरों आवे सब निसान।। ९५ ।।

ऐसा सुन्दर इन्तजाम तो कर दिया है, पर परमधाम की न्यामत तो तारतम वाणी है, जिससे सब पहचान हो जाएगी और सब निशान जाहिर हो जाएंगे।

तब गांगजी भाई पाए मन उछरंग, किए करतब अति घनें रंग।
सनेहसों सेवा करी जो अत, पेहेचान के धाम धनी हुए गलित।। ९६ ।।

तब गांगजी भाई के मन में बड़ा आनन्द हुआ और अधिक प्रेम भरी युक्तियों से धनी को रिझाने लगे। उन्होंने धाम के धनी को पहचानकर बड़े तन्मय होकर सेवा की।

साथसों हेत कियो अपार, सुफल कियो अपनो अवतार।
मैं श्रीसुन्दरबाई के चरने रहूं, एह दया मुख किन बिध कहूं।। ९७ ।।

सुन्दरसाथ की भी सेवा करके प्यार किया और अपना मनुष्य तन धारण करना सफल किया। गांगजी भाई कहते हैं कि मैं श्री श्यामाजी के चरणों में ही रहूं। धनी की कृपा का बखान मुख से कैसे करूं?

कह्यो ताको इंद्रावती नाम, ब्रह्मसृष्ट मिने घर धाम।
मों पर धनी हुए प्रसन्न, सोंपे धामके मूल वचन।। ९८ ।।

परमधाम की ब्रह्मसृष्टि जो श्री इन्द्रावतीजी हैं, वह कहती हैं कि मेरे ऊपर धाम धनी बहुत प्रसन्न हैं। उन्होंने परमधाम की मूल की सभी बातों का ज्ञान मुझे दे दिया है।

आदके द्वार न खुले आज दिनेसा हुआ न कोई खोले हम बिन।
सो कुंजी दई मेरे हाथ, तूं खोल कारन अपने साथ।। ९९ ।।

परमधाम की पहचान के दरवाजे आज दिन तक बन्द थे, जिसको मेरे बिना आज दिन तक कोई नहीं खोल सका और न कोई खोल सकेगा। उस दरवाजे को खोलने की कुंजी तारतम वाणी मुझे दे दी है और साथ में हुक्म भी दे दिया है कि सुन्दरसाथ के लिए मैं इसे खोल दूं।

मोहे करी सरीखी आप, टालने हम सबों की ताप।
आतम संग भई जाग्रत बुध, सुपनथें जगाए करी मोहे सुध।। १०० ।।

हम सब सुन्दरसाथ का दुःख दूर करने के लिए धनी ने मुझे अपने समान बना लिया है। मेरी आत्मा के साथ जागृत बुद्धि दे दी है। सपने में जगाकर धनी की सुध भी दे दी है।

श्री धनीजी को जोस आतम दुलहिन, नूर हुकम बुध मूल वतन।
ए पांचो मिल भई महामत, वेद कतेबों पोहोंची सरत।। १०१ ।।

धनीजी का जोश, श्यामा महारानी, तारतम, हुक्म और वतन की जागृत बुद्धि—इन पांचों को मुझे देकर मेरा नाम महामति रखा है। वेद कतेब में जो भविष्यवाणी कही थी उसका समय आ गया है।

Nijanand App

या कुरान या पुरान, ए कागद दोऊ प्रवान।
याके मगज माएने हम पास, अन्दर आए खोले प्राणनाथ।। १०२ ।।

कुरान और पुराण हमारी साक्षी देने वाले ग्रन्थ हैं। इनकी सार वस्तु (छिपे भेद) हमारे पास हैं। इन भेदों को मेरे अन्दर बैठकर मेरे प्राणनाथ ने खोल दिया है।

आप भी न खोले दरबार, सो मुझ से खोलाए कियो विस्तार।
मोहे दई तारतम की करनवार, सो काहूं न अटको निरधार।। १०३ ।।

धनी ने स्वयं (श्री देवचन्द्रजी के तन में बैठकर भी श्री राजजी महाराज ने) अपने घर के भेद नहीं खोले। मेरे से दरवाजा खुलवाकर ज्ञान का विस्तार कराया। इस संसार सागर में तारतम की नाव का चप्पू मेरे हाथ में दे दिया। अब यह नाव कहीं भी रुकेगी नहीं। सीधा पार कर घर ले जाएगी।

सब संसे को कियो निरवार, कोई संसा न रह्या वार के पार।
रोसन करूं लेऊं हुकम बजाए, ब्रह्मसृष्ट और दुनियां देऊं जगाए।। १०४ ।।

इस ज्ञान को लेकर श्री राजजी महाराज के हुक्म का पालन करके ब्रह्मसृष्टि और दुनियां को जागृत कर दूंगी तथा सबके हद और बेहद के संशय मिटा दूंगी।

द्वार तोबा के खुले हैं अब, पीछे तो दुनियां मिलसी सब।
जब द्वार तोबा के मूंदयो, रैन गई भोर जो भयो।। १०५ ।।

तोबा के दरवाजे अब खुले हैं जिससे अज्ञान हट गया है और ज्ञान का सवेरा हो गया है। जब तोबा के दरवाजे बन्द हो जाएंगे तो पीछे तो सब दुनियां मिलेगी ही।

या भली या बुरी, जिनहूं जैसी फैल जो करी।
तब आगूं आई सबों की करनी, जिन जैसी करी आप अपनी।। १०६ ।।

तोबा के दरवाजे बन्द होने पर जिनकी जैसी करनी होगी, वह सबके आगे आएगी और भली बुरी के अनुसार वैसा ही फल मिलेगा।

तब कोई नहीं किसी के संग, दुख सुख लेवे अपने अंग।
करूं ब्रह्मसृष्ट को मिलाप, अखंड सूर उदे भयो आप।। १०७ ।।

उस समय कोई किसी का साथ न दे सकेगा। अपनी करनी माफिक दुःख-सुख सभी को भोगने पड़ेंगे। अब सब ब्रह्मसृष्टि को इकट्ठा करती हूं। अखण्ड तारतम वाणी आ गई है। इससे उनको पहचान कराती हूं।

विश्व मिली करने दीदार, पीछे कोई ना रहे मिने संसार।
ब्रह्मसृष्ट को पिया संग सुख, सो कह्यो न जाए या मुख।। १०८ ।।

ब्रह्मसृष्टि को धनी का इतना सुख प्राप्त होगा जो कहने में नहीं आता। उसके बाद सारी दुनियां दर्शन करने दौड़ेगी। संसार में कोई पीछे नहीं रहेगा।

Nijanand App

ब्रह्मसृष्ट को ऐसो नूर, जो दुनियां थी बिना अंकूर।
ताए नए अंकूर जो कर, किए नेहेचल देख नजर।। १०९ ।।

ब्रह्मसृष्टि की ऐसी महिमा होगी कि यह दुनियां जिसका कहीं मूल नहीं था, उनको नए अंकुर (तारतम वाणी से अखण्ड तन) देकर बहिश्त में अखण्ड कर देंगे।

श्री धनीजी को दीदार सब कोई देख, होए गई दुनियां सब एक।
किनहूं कछुए ना कह्यो, क्रोध ब्रोध काहूको ना रह्यो।। ११० ।।

श्री प्राणनाथजी का दर्शन करके सारी दुनियां एक हो जाएगी। सभी अपने क्रोध और विरोध को छोड़ देंगे और किसी को कुछ कहने की ताकत न रहेगी।

श्री धनीजी को ऐसो जस, दुनियां आपे भई एक रस।
तेज जोत प्रकास जो ऐसो, काहूं संसे ना रह्यो कैसो।। १११ ।।

श्री धनीजी की ऐसी शोभा है (महिमा है) कि इससे पूरी दुनियां एक रस हो जाएगी। तारतम वाणी का ऐसा तेज प्रकाश है, जिससे किसी के संशय नहीं रहेंगे।

सब जातें मिली एक ठौर, कोई ना कहे धनी मेरा और।
पिया के विरहसों निरमल किए, पीछे अखंड सुख सबोंको दिए।। ११२ ।।

सब जातियां इकट्ठी एक साथ एक स्थान पर मिलेंगी (योगमाया के ब्रह्माण्ड में)। सबको योगमाया का तन और जागृत बुद्धि मिलने से सभी एक धनी की पूजा करेंगे। धनी की पहचान होने पर पश्चाताप से निर्मल होकर सभी को अखण्ड बहिश्तों का सुख मिलेगा।

ए ब्रह्मलीला भई जो इत, सो कबहूं हुई न होसी कित।
ना तो कई उपज गए इंड, भी आगे होसी कई ब्रह्मांड।।। ११३ ।।

यह ब्रह्म लीला जो यहां हुई है, ऐसी कभी यहां हुई नहीं है और न कभी होगी वरन् कई ब्रह्माण्ड पहले हो गए और आगे भी कई बनते रहेंगे।

ए तीन ब्रह्मांड हुए जो अब, ऐसे हुए ना होसी कब।
इन तीनों में ब्रह्मलीला भई, बृज रास और जागनी कही।। ११४ ।।

यह तीन ब्रह्माण्ड ब्रज, रास और जागनी के अब हुए हैं। ऐसे पहले न कभी हुए हैं और न कभी होंगे। इन तीनों में पारब्रह्म की लीला हुई है, जिसको ब्रज रास और जागनी कहा गया है।

ज्यों नींद में देखिए सुपन, यों बृज को सुख लियो सैयन।
सुपन जोगमाया को जोए, आधी नींद में देख्या सोए।। ११५ ।।

जैसे नींद में सपना देखते हैं, उसी तरह से सखियों ने ब्रज के सुख को लिया तथा योगमाया के सपने को आधी नींद में देखा।

Nijanand App

कछुक नींद कछुक सुध, रास को सुख लियो या विध।
जागनी को जागते सुख, ए लीला सुख क्यों कहूं या मुख।। ११६ ।।

योगमाया में घर की पहचान न होने से नींद थी और धनी की पहचान होने की सुध थी। इस तरह से रास की लीला का आनन्द लिया। जागनी लीला का जागते हुए सुख मिल रहा है। इस लीला के सुख का वर्णन कैसे करूं?

जागनी में लीला धाम जाहेर, निसान हिरदे लिए चित धर।
तब उपज्यो आनन्द सबों करार, ले नजरों लीला नित विहार।। ११७ ।।

जागनी के ब्रह्माण्ड में परमधाम की पूरी पहचान हो गई और हमारे चित्त में सभी निशान (ब्रज, रास और परमधाम के पच्चीस पक्ष) याद आ गए। हमारी नजरों में आनन्द की लीला आ जाने से बहुत आनन्द और आराम मिला।

इतहीं बैठे घर जागे धाम, पूरन मनोरथ हुए सब काम।
धनी महामत हंस ताली दे, साथ उठा हंसता सुख ले।। ११८ ।।

अब मूल मिलावे में बैठे-बैठे ही घर में जागे और सब चाहना जो बाकी थी, वह पूरी हो गई। अब धनी के साथ, सब सुन्दरसाथ हंसते हुए ताली देकर मूल मिलावे में उठेंगे।

॥ प्रकरण ॥ ३७ ॥ चौपाई ॥ ११८५ ॥

प्रकरण तथा चौपाइयों की कुल संख्या ॥ प्रकरण ॥ १४८ ॥ चौपाई ॥ ३८९८ ॥

॥प्रकास हिन्दुस्तानी–जंबूर सम्पूर्ण॥

Nijanand App